International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 6, Nov.-Dec., 2023, Impact Factor: 7.326

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव

शिव शंकर कुमार[1], डॉ0 नजमा बेबी[2]

[1]शोध–प्रज्ञ, शिक्षा विभाग, ल0ना0मि0वि0, दरभंगा
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ0 जा0 हु0 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा

सार–संक्षेप

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व में क्रांति ला दिया है। जाहिर है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी इससे काफी बदलाव आया है। प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में यदि हमें देश विदेशों में हुए शैक्षिक नवाचार, अनुसंधान, चिकित्सा के क्षेत्र में हुए नवीन उपलब्धियों आदि की जानकारी प्राप्त करना है तो सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की जानकारी एवं प्रयोग से अवगत होना जरूरी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम घर बैठे अनेक प्रकार की सूचना तथा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु इन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यमों की हमें आद्योपान्त जानकारी होना जरूरी है। इनके अभाव में आगे नहीं बढ़ सकते हैं। शिक्षा का दूसरा घटक है अध्यापन क्रिया, जो संचार क्रान्ति से अछूता नहीं रह सकता। शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम, अध्यापन, प्रशासन, शोध, सह–प्रवृत्तियों आदि को युद्ध स्तर पर संचार क्रान्ति ने प्रभावित किया है। कम्प्यूटर व इन्टरनेट के उपयोग तथा महत्त्व के कारण कम्प्यूटर पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। शिक्षा का माध्यम कम्प्यूटर व इन्टरनेट हो जाने से महत्त्वपूर्ण ज्ञान को सॉफ्टवेयर में तैयार करवाया जाता है। कम्प्यूटर आधारित शिक्षण में देश की आवश्यकतानुसार सॉफ्टवेयर तैयार किये जा रहे हैं। मूल्यांकन कार्य एवं शैक्षिक प्रशासन संचार क्रान्ति द्वारा काफी सुगम हो गया है। विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का आदान प्रदान ई–मेल के माध्यम से सरल हो गया है। इससे समय, धन तथा श्रम की बचत होती तो है ही साथ ही छात्रों को विभिन्न विद्वानों के विचारों को जानने, समझने तथा अपनी समस्याओं का समाधान करने में भी मदद मिलती है। ज्ञातव्य है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी द्वारा अपनी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर करने की कोशिश करते हैं।

शब्द कुंजी : शिक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जागरूकता, शैक्षिक उपलब्धि आदि।

प्रस्तावना

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण आधारभूत परिवर्तन करने में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके सम्मिश्रण ने हमे शिक्षा के अनेक आश्चर्यजनक श्रव्य–दृश्य माध्यम जैसे रेडियो, टेजीविजन, टेलीकॉन्फ्रेन्सिंग, विडियोंकॉन्फ्रेन्सिंग, कम्प्यूटर, सी.डी., मोबाईल, इंटरनेट, आदि उपलब्ध करावाये हैं, जिन्होंने ज्ञान के संचालन, संचारण एवं विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी सहायता से छात्रों को रूचिकर तरीके से शिक्षा उपलब्ध हुई है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रक्रिया में सुधार लाने तथा छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विशेष भूमिका रही है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी 21वीं सदी में अध्ययन–अध्यापन का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन चुकी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के कौशल और ज्ञान के विस्तार की कुंजी बन चुकी है।[1]

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का प्रसार सभी हिस्सों में तेजी से हुआ है और संगठन की विभिन्न प्रक्रियाओं में इसकी उपयोगिता स्पष्ट रूप से लाभकारी है। आईसीटी संगठन को एकीकृत और ग्राहक–उन्मुख बनने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार समस्त प्रक्रिया में हम आईसीटी का लाभ उठा सकते हैं। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को सार्वभौमिक सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में स्वीकार किया गया है। परन्तु, आई.सी.टी. तत्परता के स्तरों और उपयोग को उत्पादकता स्तर में असमानता के रूप में देखा जा सकता है जो देश की आर्थिक विकास दर को प्रभावित कर सकता है। सामाजिक और आर्थिक विकास के क्षेत्र में कार्यरत देशों के लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी को समझने और उसके साथ समन्वय स्थापित करना काफी महत्वपूर्ण है।

सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी में क्रांति ने जिन्दगी के हर पहलु को प्रभावित किया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। बहुत से शोधों ने यह सिद्ध भी किया है कि शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी का उपयोग महत्वपूर्ण है। इसकी आवश्यकता को महसूस करते हुए नई शिक्षा नीति 1986 ने आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में कम्प्यूटर साक्षरता एवं सुचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के लिए जो सिफारिश दी थी उन्हें आज भी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यात्मक रूप से देखा जा सकता है। सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के विकास तथा शिक्षा में उपयोग ने शिक्षा को सरल, सुबोध तथा सुगम बना दिया है। शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण, पाठयक्रम का निर्माण, विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण, शैक्षिक उद्देश्य मूल्यांकन, नवाचार या अनुसंधान आदि में सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के आगमन से शिक्षा के विकास में आने वाली कठिनाइयाँ दूर हुई हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में हो रहे नये–नये बदलावों ने पढ़ने और सीखने के पारम्परिक तौर–तरीकों को बदल कर रख दिया है। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की महत्ता सम्पूर्ण शिक्षातन्त्र पर सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। आज ज्ञान की संरचना वैश्विक रूप धारण कर चुकी है। आधुनिक श्रव्य–दृश्य शिक्षण सामग्री पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बन गयी है। आधुनिक शिक्षा जगत् में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का प्रयोग करते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जा रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों (औपचारिक, अनौपचारिक व निरौपचारिक शिक्षा) को प्रभावित किया है। औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत विद्यालयी शिक्षा विशेषकर उच्च माध्यमिक शिक्षा में संचालित शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया में इसका प्रयोग शिक्षा के गुणात्मक संवर्धन एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। परिणामतः पारम्परिक शिक्षण पद्धति की तुलना में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) प्रदत्त शिक्षण पद्धति के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मकरूप से बेहतर एवं उच्च हो रही है।[2]

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत पठन–पाठन के अनुभवों में एक नया मोड़ आया है। मीडिया भी पढ़ाई के साधन भिन्न–भिन्न रूपों में उपलब्ध कराता है जिसे छात्र ग्रहण करते हैं। विद्वतजन अपने ज्ञान, अनुभवों को और सर्वोत्तम पद्धतियों को यू–ट्यूब स्लाइड शेयर और ट्विटर पर साझा करते हैं। वस्तुतः हर एक सिक्के के दो पहलू होते हैं सकारात्मक एवं नकारात्मक। यदि छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तो नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। क्योंकि सोशल मीडिया पर छात्र व छात्राएँ अधिक से अधिक समय बिताते हैं। कुछ छात्र पढ़ाई व अध्ययन पर कम ध्यान देते हैं और चैटिंग करना, मित्र बनाना आदि कार्य अधिक करते हैं साथ ही अश्लील विडियो देखने में, अभद्र गाना सुनने में अपना बहुमूल्य समय बर्वाद करते है। इसके अलावे साइबर अपराधों में भी लिप्त होते जा रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का छात्रों पर प्रभाव व दुष्प्रभाव दोनों हो रहा है। यह इस पर निर्भर करता है कि छात्र इसका उपयोग कितना व किस तरह करते हैं।

जहाँ तक उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के पड़ने वाले प्रभाव की बात है, वह तो छात्र–छात्राओं के सकारात्मक व नकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यदि छात्र सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है तो वह सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी शिक्षण व अध्ययन सामग्री पर ही ध्यान देगा तथा इसका सही उपयोग करेगा। इससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी। यदि छात्र का दृष्टिकोण नकारात्मक रहेगा तो वह सिर्फ व सिर्फ चैटिंग करने में, मित्र बनाने में, अश्लील विडियों देखने में व साइबर अपराधों में संलिप्त होने में समय नष्ट कर देगा। ऐसे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव न पड़कर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ेगा। जाहिर है कि इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न रहेगी।

स्पष्ट है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एवं शिक्षा के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी शिक्षा प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा विद्यार्थियों में मौलिकता प्रवाह, किसी समस्या के प्रति संवेदनशीलता आदि गुणों का विकास किया जा सकता है। प्रत्येक छात्र पर इसका प्रभाव भिन्न–भिन्न पड़ता है। छात्रों के दृष्टिकोण का प्रभाव उसके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। अतः आवश्यकता यह है कि विभिन्न छात्रों पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव की जानकारी प्राप्त की जाये एवं यथानुसार उनकी शिक्षा व्यवस्था की जाये।

निष्कर्ष

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा छात्र अपने विषय में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक संचार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यमों यथा–सैटेलाइट, रेडियो, टेलीविजन, ऑडियो–विडियो कैसेट, कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट इत्यादि के उपयोग से छात्र न केवल अपने अध्ययन से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं बल्कि वह अन्य विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी हासिल कर सकते हैं और बौद्धिक क्षमता का विकास कर सकते हैं, इससे न केवल छात्रों के ज्ञान का स्तर बढ़ेगा बल्कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होगी। यदि छात्र एवं छात्राएँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग अपने अध्ययन के लिए करते हैं तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि निश्चित तौर पर उच्च होगी और यदि छात्र एवं छात्राएँ इसका उपयोग केवल मनोरंजन के लिए करते हैं तो इसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ेगा। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में सह–संबंध है।

संदर्भ

[1]. पाण्डे, के.पी. (1983), एडवॉन्सड एजुकेशनल साइकोलॉजी फॉर टीचर्स, अमिताश प्रकाशन, मेरठ।
[2]. माथुर, एस.एस. (2007), शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
[3]. राजमणि सरोज (2005). विद्यार्थियों के व्यवहार पर दूरदर्शन चैनल द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन, लघु–शोध प्रबन्ध, कानपुर : छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय।
[4]. शर्मा, आर.ए. (1980), शिक्षा तकनीकी, माडर्न पब्लिशर्स, मेरठ।
[5]. श्रीवास्तव, अनुपमा (2012): शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग, सोवनियर, इंटरनेशनल सेमीनार बाई द लर्निंग कम्युनिटी ऑन प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट ऑफ टीचर्स, 17–18 नवम्बर, 2012